भगवान् यमराज स्तुति एवं यमाष्टक

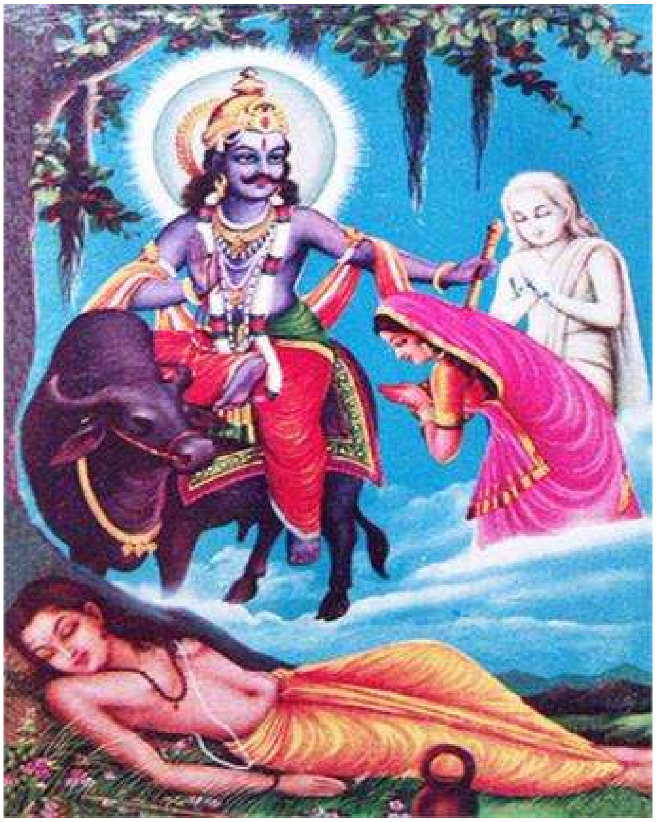

Raj Verma ji

Mob- +91-9897507933

WhatsApp- +91-7500292413

Website- mahakalshakti.wordpress.com

Website- www.scribd.com/mahakalshakti

Email- mahakalshakti@gmail.com

स्तुति-

ॐ यम, धर्मराज, मृत्यु, अन्तक, वैवस्वत, काल, सर्वभूतक्षय, औदुम्बर, दध्न, नील, परमेष्ठी, वृकोदर, चित्र और चित्रगुप्त- इन चौदह नामोंसे पुकारे जाने वाले भगवान् यमराजको नमस्कार है। जिनका मुख दाढ़ोंके कारण विकराल प्रतीत होता है और टेढ़ी भौंहोंसे युक्त आंखें क्रूरतापूर्ण जान पड़ती हैं, जिनके शरीरमें ऊपर ही ओर उठे हुए बड़े-बड़े रोम हैं तथा ओठ भी बहुत लम्बे दिखाई देते हैं, ऐसे आप यमराजको नमस्कार है।

आपकी अनेक भुजाएं हैं, अनन्त नख हैं तथा कज्जलगिरिके समान काला शरीर और भयंकर रूप है। आपको नमस्कार है। भगवन्। आपका वेष बड़ा भयानक है। आप पापियोंको भय देते, कालदण्डसे धमकाते और सब प्रकारके अस्त्र-शस्त्र धारण करते हैं। बहुत बड़ा भैंसा आपका वाहन है। आपके नेत्र दहकते हुए अंगारोंके समान जान पड़ते हैं। आप महान हैं। मेरु पर्वतके समान आपका विशाल रूप है। आप लाल माला और वस्त्र धारण करते हैं। आपको नमस्कार है।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

कल्पान्तके मेघोंकी भांति जिनकी गम्भीर गर्जना और प्रलयकालीन वायुके समान प्रचण्ड वेग है, जो समुद्रको भी पी जाते, सम्पूर्ण जगत्को ग्रास बना लेते, पर्वतोंको भी चबा जाते और मुखसे आग उगलते हैं, उन भगवान् यमराजको नमस्कार है। भगवन्! अत्यन्त घोर और अग्निके समान तेजस्वी कालरूप मृत्यु तथा बहुतसे रोग आपके पास सेवामें उपस्थित रहते हैं। आपको नमस्कार है।

आप भयानक मारी और अत्यन्त भयंकर महामारीके साथ रहते हैं। पापिष्ठोंके लिये आपका ऐसा ही स्वरूप है। आपको बारंबार नमस्कार है। वास्तवमें तो आपका मुख खिले हुए कमलके समान प्रसन्नतासे पूर्ण है। आपके नेत्रोंमें करुणा भरी है। आप पितरस्वरूप हैं। आपको नमस्कार है। आपके केश अत्यन्त कोमल हैं और नेत्र भौंहोंकी रेखासे सुशोभित हैं। मुखके ऊपर मूंछे बड़ी सुन्दर जान पड़ती हैं। पके हुए बिम्बफलके समान लाल ओठ आपकी शोभा बढ़ाते है। आप दो भुजाओंसे युक्त, सुवर्णके समान कान्तिमान् और सदा प्रसन्न रहने वाले हैं। आपको नमस्कार है।

आप सब प्रकारके आभूषणोंसे विभूषित, रत्नमय सिंहासन पर विराजमान, श्वेत माला और श्वेत वस्त्र धारण करने वाले तथा श्वेत छत्रसे सुशोभित हैं। आपके दोनों ओर दो दिव्य नारियां खड़ी होकर हाथोंमें सुन्दर चंवर लिये डुला रही हैं। आपको नमस्कार है। गलेके रत्नमय हारसे आप बड़े सुन्दर

जान पड़ते हैं। रत्नमय कुण्डल आपके कानोंकी शोभा बढ़ाते हैं। आपके हार और भुजबंद भी रत्नके ही हैं तथा आपके किरीटमें नाना प्रकारके रत्न जड़े हुए हैं। आपकी कृपादृष्टि सीमाका अतिक्रमण कर जाती है। आप मित्रभावसे सबको देखते हैं। सब प्रकारकी सम्पत्तियां आपको समृद्धिशाली बनाती हैं। आप सौभाग्यके परम आश्रय हैं तथा धर्म और अधर्मके ज्ञानमें निपुण सभासद् आपकी उपासना करते हैं। आपको नमस्कार है।

संयमनीपुरीकी सभामें शुभ्र रूपवाले धर्म, शुभलक्षण सत्य, चन्द्रमाके समान मनोहर रूपधारी शम, दूधके समान उज्जवल दम तथा वर्णाश्रमजनित विशुद्ध आचार आपके पास मूर्तिमान् होकर सेवामें उपस्थित रहते हैं, आपको नमस्कार है। आप साधुओं पर सदा स्नेह रखते, वाणीसे उनमें प्राणों का संचार करते, वचनोंसे संतोष देते और गुणोंसे उन्हें सर्वस्व समर्पण करते हैं। सज्जन पुरुषोंपर सदा संतुष्ट रहने वाले आप धर्मराजको बारंबार नमस्कार है।

जो सबके काल होते हुए भी शुभकर्म करने वाले पुरुषों पर कृपा करते हैं, जो पुण्यात्माओंके हितैषी, सत्पुरुषोंके संगी, संयमनीपुरीके स्वामी, धर्मात्मा तथा धर्मका अनुष्ठान करने वालोंके प्रिय हैं, उन धर्मराजको नमस्कार है। जिनकी पीठ पर लटके हुए घण्टोंकी ध्वनिसे सारी दिशाएं गूंज उठती हैं तथा जो ऊंचे-ऊंचे सींगों और फुंकारोंके कारण अत्यन्त भीषण प्रतीत होता है,

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

ऐसे महान् भैंसे पर जो विराजमान रहते हैं तथा जिनकी आठ बड़ी–बड़ी भुजाएं क्रमशः नाराच, शक्ति, मुसल, खड्ग, गदा, त्रिशूल, पाश और अंकुश से सुशोभित हैं, उन भगवान् यमराजको प्रणाम है।

जो चौदह सत्पुरुषोंके साथ बैठकर जीवोंके शुभ–अशुभ कर्मोंका भली भांति विचार करते हैं, साक्षियों द्वारा अनुमोदन कराकर उन्हें दण्ड देते हैं तथा सम्पूर्ण विश्वको शांत रखते हैं, उन दक्षिण दिशाके स्वामी शांतस्वरूप यमराजको नमस्कार है। जो कल्याणस्वरूप, भयहारी, शौच संतोष आदि नियमोंमें स्थित मनुष्योंके नेत्रोंको प्रिय लगने वाले, सावर्णि, शनैश्चर और वैवस्वत मनु– इन तीनोंकी माताके सौतेले पुत्र सूर्यदेव के आत्मज तथा सदाचारी मनुष्योंको वर देने वाले हैं, उन भगवान् यमराजको नमस्कार है।

भगवन्! जब आपके दूत पापी जीवोंको दृढ़तापूर्वक बांधकर आपके सामने उपस्थित करते हैं, तब आप उन्हें यह आदेश देते हैं कि 'इन पापियोंको अनेक घोर नरकोंमें गिराकर छेद डालो, टुकड़े–टुकड़े कर दो, जला दो, सुखा डालो, पीस दो।' इस प्रकारकी बातें कहते हुए यमुनाजीके ज्येष्ठ भ्राता आप यमराजको मेरा प्रणाम है। जब आप अनन्त रूप धारण करते हैं, उस समय आपके गोलाकार नेत्र किनारे–किनारे से लाल दिखाई देते हैं। आप भीमरूप होकर भय प्रदान करते हैं। टेढ़ी भौंहोंके करण आपका मुख वक्र जान पड़ता है। आपके शरीरका रंग उस समय नीला हो जाता है तथा आप

अपने निर्दयी दूतोंके द्वारा शास्त्रोक्त नियमोंका उल्लंघन करने वाले पापियोंको खूब कड़ाईके साथ धमकाते हैं। आपको सर्वदा नमस्कार है।

जिन्होंने पंचयज्ञोंका अनुष्ठान किया है तथा जो सदा ही अपने कर्मोंके पालनमें सलंग्न रहे हैं, ऐसे लोगोंको दूरसे ही विमान पर आते देख आप दोनों हाथ जोड़े आगे बढ़कर उनका स्वागत करते हैं। आपके नेत्र कमलके समान विशाल हैं तथा आप माता संज्ञाके सुयोग्य पुत्र हैं। आपको मेरा प्रणाम है। जो सम्पूर्ण विश्वसे उत्कृष्ट, निर्मल, विद्वान, जगत्के पालक, ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवके प्रिय, सबके शुभ अशुभ कर्मोंके उत्तम साक्षी तथा समस्त संसारको शरण देने वाले हैं, उन भगवान् यमको नमस्का है।

वसिष्ठजी कहते हैं– इस प्रकार स्तुति करके मृगश्रृंगने उदारता और करुणाके भण्डार तथा दक्षिण दिशाके स्वामी भगवान् यमका ध्यान करते हुए उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। इससे भगवान् यमको बड़ी प्रसन्नता हुई। वे महान् तेजस्वी रूप धारण किये मुनिके सामने प्रकट हुए। उस समय उनका मुखकमल प्रसन्नतासे खिला हुआ था और किरीट, हार, केयूर तथा मणिमय कुण्डल धारण करने वाले अनेक सेवक चारों ओर से उनकी सेवामें उपस्थित थे। भगवान् यमराज विप्रवर मृगश्रृंको वर प्रदान कर अन्तर्धान हो गये। जो मानव प्रतिदिन यमराजकी इस स्तुतिका पाठ करेगा, उसे कभी यम यातना नहीं भोगनी पड़ेगी, उसके ऊपर यमराज प्रसन्न होंगे, उसकी संततिका कभी

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413

अपमृत्युसे पराभव न होगा, उसे इस लोक और परलोकमें भी लक्ष्मीकी प्राप्ति होगी और उसे कभी रोंगोंका शिकार नहीं होगा पड़ेगा।

सावित्री द्वारा यमस्तुति (यमाष्टक)– मैं उन भगवान् धर्मराज को प्रणाम करती हूं, जो सबके साक्षी हैं, जिनकी सम्पूर्ण भूतोंमें समता है, अतएव जिनका नाम शमन है, उन भगवान् शमनको मैं प्रणाम करती हूं। जो कर्म अनुरूप कालके सहयोगसे विश्वके सम्पूर्ण प्राणियोंका अंत करते हैं, उन भगवान् कृतान्त को मैं प्रणाम करती हूं। जो पापी जनोंको शुद्ध करने के निमित्त दण्डनीय लोगोंके लिये ही हाथमें दण्ड धारण करते हैं तथा जो समस्त कर्मोंके उपदेशक हैं, उन भगवान् दण्डधरको मेरा प्रणाम है। जो विश्वके सम्पूर्ण प्राणियोंका तथा उनकी समूची आयुका निरन्तर परिगणन करते रहते हैं, जिनकी गतिको रोक देना अत्यन्त कठिन है, उन भगवान् कालको मैं प्रणाम करती हूं। जो तपस्वी, वैष्णव, धर्मात्मा, संयमी, जितेन्द्रिय और जीवोंके लिये कर्मफल देने को उद्यत हैं, उन भगवान् यमको मैं प्रणाम करती हूं। जो अपनी आत्मामें रमण करने वाले, सर्वज्ञ, पुण्यात्मा पुरुषोंके मित्र तथा पापियोंके लिये कष्टप्रद हैं, उन पुण्यमित्र नामसे प्रसिद्ध भगवान् धर्मराज को मैं प्रणाम करती हूं। जिनका जन्म ब्रह्माजी के वंशमें हुआ है तथा जो

ब्रह्मतेजसे सदा प्रज्वलित रहते हैं एवं जिनके द्वारा परब्रह्मका सतत ध्यान होता रहता है, उन ब्रह्मवंशी भगवान् धर्मराजको मेरा प्रणाम है।

इस प्रकार प्रार्थना करके सावित्री ने धर्मराज को प्रणाम किया। तब धर्मराजने सावित्रीको विष्णु भजन तथा कर्मके विपाक का प्रसंग सुनाया। जो मनुष्य प्रातः उठकर निरन्तर इस यमाष्टक का पाठ करता है, उसे यमराजसे भय नहीं होता और उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। यदि महान् पापी व्यक्ति भी भक्ति से सम्पन्न होकर निरन्तर इसका पाठ करता है तो यमराज अपने काव्य व्यूह से निश्चित ही उसकी शुद्धि कर देते हैं।

GURUDEV RAJ VERMA
9897507933
7500292413